आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ११-१२

परोक्ष प्रमाण के भेद

आद्येपरोक्षम् ॥११॥

अर्थ - [आद्ये] प्रारम्भ के दो अर्थात् मतिज्ञान और श्रुतज्ञान [परोक्षम्] परोक्ष प्रमाण हैं।

आद्येपरोक्षम् ।।११।। - ९ से १२ सूत्र की विषयवस्तु

- प्रमाण [सूत्र ९]
  - परोक्ष [सूत्र १०]
    - मतिज्ञान [सूत्र ११]
    - श्रुतज्ञान [सूत्र ११]
      - संशयवान या भूलयुक्त नहीं है
      - सर्वथा सच्चे ज्ञान है
      - पर अपेक्षा से परोक्ष कहा है
      - स्व अपेक्षा से प्रत्यक्ष हैं
      - उपयोग के समय इन्द्रिय या मन का निमित्त होता है
  - प्रत्यक्ष [सूत्र १०]
    - विकल [सूत्र १२]
      - अवधिज्ञान [सूत्र १२]
      - मन:पर्ययज्ञान [सूत्र १२]
    - सकल [सूत्र १२]
      - केवलज्ञान [सूत्र १२]

आद्येपरोक्षम् ।।११।। - सम्यक्मतिज्ञान सम्बन्धी प्रश्न-उत्तर

- क्या सम्यक्मतिज्ञानवाला जीव यह जान सकता है कि मुझे सम्यग्ज्ञान और सम्यग्दर्शन है ?
- सम्यक्मतिज्ञानी , दर्शनमोहनीय प्रकृति के पुद्गलों को प्रत्यक्ष नहीं देख सकता और उसके पुद्गल उदयरूप हों तथा जीव उसमें युक्त हो तो क्या उसकी भूल नहीं होगी ?
- क्या सम्यक्मतिज्ञान यह जान सकता है कि अमुक जीव भव्य है या अभव्य ?

आद्येपरोक्षम् ।।११।। - सम्यक्श्रुतज्ञान सम्बन्धी स्पष्टीकरण

श्रुतज्ञान के तीन प्रकार हो जाते हैं -

(१) सम्पूर्ण परोक्ष

(२) आँशिक परोक्ष

(३) परोक्ष बिलकुल नहीं किन्तु प्रत्यक्ष

आद्ये परोक्षम।।११।। - श्रुतज्ञान के तीन प्रकार

(१) शब्दरूप जो श्रुतज्ञान है, सो परोक्ष ही है तथा दूरभूत स्वर्ग-नरकादि बाह्य विषया का ज्ञान करानेवाला विकल्परूप ज्ञान भी परोक्ष ही है।

आद्ये परोक्षम।।११।। - श्रुतज्ञान के तीन प्रकार

(२) आभ्यन्तर में सुख-दुःख के विकल्परूप जो ज्ञान होता है, वह अथवा 'मैं अनन्त ज्ञानादिरूप हूँ' - ऐसा ज्ञान ईषत् (किञ्चित्) परोक्ष है।

आद्ये परोक्षम।।११।। - श्रुतज्ञान के तीन प्रकार

(३) निश्चय भावश्रुतज्ञान शुद्धात्मा के सम्मुख होने से सुख संवित्ति (ज्ञान) स्वरूप है। यद्यपि वह ज्ञान निज को जानता है, तथापि इन्द्रियों तथा मन से उत्पन्न होनेवाले विकल्पों के समूह रहित होने से निर्विकल्प है। (अभेदनय से) उसे 'आत्मज्ञान' शब्द से पहचाना जाता है। यद्यपि वह केवलज्ञान की अपेक्षा से परोक्ष है, तथापि छद्मस्थों के क्षायिक ज्ञान की प्राप्ति न होने से, क्षायोपशमिक होने पर भी उसे 'प्रत्यक्ष' कहा जाता है।

आद्येपरोक्षम् ।।११।। - सम्यक्मति-श्रुतज्ञान सम्बन्धी प्रश्न

इस सूत्र में मति और श्रुतज्ञान को परोक्ष कहा है, तथापि आपने उसे ऊपर 'प्रत्यक्ष' कैसे कहा है ?

प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद

प्रत्यक्षमन्यत् ॥ १२ ॥

अर्थ - [अन्यत्] शेष तीन अर्थात् अवधि, मनःपर्यय और केवलज्ञान [प्रत्यक्षम्] प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

प्रत्यक्षमअन्यत् ।।१२।। - ९ से १२ सूत्र की विषयवस्तु

- प्रमाण [सूत्र ९]
  - परोक्ष [सूत्र १०]
    - मतिज्ञान [सूत्र ११]
    - श्रुतज्ञान [सूत्र ११]
  - प्रत्यक्ष [सूत्र १०]
    - सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष [सूत्र ११]
    - संवेदन प्रत्यक्ष [सूत्र ११]
    - परमार्थिक प्रत्यक्ष [सूत्र १२]
      - विकल [सूत्र १२]
        - अवधिज्ञान [सूत्र १२]
        - मन:पर्ययज्ञान [सूत्र १२]
      - सकल [सूत्र १२]
        - केवलज्ञान [सूत्र १२]

प्रत्यक्षमन्यत् ॥ १२ ॥ - सूत्र का सिद्धांत

अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान, विकल-प्रत्यक्ष हैं तथा केवलज्ञान, सकल प्रत्यक्ष है। [प्रत्यक्ष = प्रति+अक्ष] 'अक्ष' का अर्थ आत्मा है। आत्मा के प्रति जिसका नियम हो, अर्थात् जो परनिमित्त-इन्द्रिय, मन, आलोक (प्रकाश), उपदेश आदि से रहित आत्मा के आश्रय से उत्पन्न हो, जिसमें दूसरा कोई निमित्त न हो,ऐसा ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान कहलाता है।

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ११-१२